I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

संस्कारों में काल-चयन (मुहूर्त) का वैज्ञानिक विश्लेषण : जैविक घड़ी एवं ब्रह्माण्डीय लय के आलोक में

चमन लाल [1*], डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी [2]

[1] शोधार्थी, पीएच. डी संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, जयपुर, राजस्थान, भारत

[2] शोध निर्देशक, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * चमन लाल

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20774273

सारांश

भारतीय ज्ञान-परम्परा में "काल" को केवल घटनाओं के अनुक्रम का मापक नहीं, अपितु एक सजीव, सक्रिय एवं नियामक शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। वेद, उपनिषद, स्मृति एवं ज्योतिष ग्रंथों में काल की सत्ता को सर्वव्यापी एवं सर्वनियामक बताया गया है। षोडश संस्कारों की परम्परा में प्रत्येक संस्कार के लिए विशिष्ट मुहूर्त का निर्धारण किया गया है, जो यह संकेत करता है कि प्राचीन भारतीय मनीषियों ने समय के महत्व को अत्यन्त गहराई से समझा था।

सामान्यतः मुहूर्त-विज्ञान को धार्मिक आस्था या ज्योतिषीय विश्वास के रूप में देखा जाता है, किन्तु यह दृष्टिकोण अधूरा है। यदि मुहूर्त का गहन विश्लेषण किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि इसके पीछे एक सुव्यवस्थित वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं ब्रह्माण्डीय तंत्र कार्य कर रहा है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में मुहूर्त की अवधारणा का वैदिक, उपनिषदिक एवं ज्योतिषीय सन्दर्भों में विश्लेषण करते हुए उसे आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों—विशेषतः जैविक घड़ी (Biological Clock) एवं ब्रह्माण्डीय लय (Cosmic Rhythm)—के आलोक में पुनर्पाठित किया गया है। यह प्रतिपादित किया गया है कि मुहूर्त का चयन मानव शरीर की आन्तरिक लयों, मानसिक अवस्था तथा ब्रह्माण्डीय चक्रों के मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास है, जो संस्कारों की प्रभावशीलता को सुनिश्चित करता है।

अतः यह शोध यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि मुहूर्त-विज्ञान केवल परम्परा नहीं, बल्कि एक उन्नत "समय-विज्ञान प्रणाली" (Time-Optimization System) है, जो आज भी वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से प्रासंगिक है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-09-2024
- **Accepted:** 27-10-2024
- **Published:** 30-10-2024
- **IJCRM:**3(5); 2026: 304-310
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

चमन लाल, डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी. संस्कारों में काल-चयन (मुहूर्त) का वैज्ञानिक विश्लेषण : जैविक घड़ी एवं ब्रह्माण्डीय लय के आलोक में. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;3(5):304-310.

मूल शब्द: मुहूर्त-विज्ञान, काल सिद्धांत, संस्कार परम्परा, जैविक एवं ब्रह्माण्डीय लय, वैदिक ज्योतिष

© 2026 चमन लाल, डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

भारतीय दर्शन में "काल" को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है। यह केवल भौतिक घटनाओं के अनुक्रम का मापक नहीं, बल्कि सृष्टि की समग्र व्यवस्था को संचालित करने वाला एक मूलभूत सिद्धांत है।

महाभारत में स्पष्ट रूप से कहा गया है—

"कालः सर्वभूतानां राजा भवति नान्यथा।" [1]

अर्थात् काल ही समस्त प्राणियों का नियन्ता है। यह कथन केवल दार्शनिक नहीं, बल्कि एक गहन वैज्ञानिक सत्य की ओर संकेत करता है कि समस्त सृष्टि एक निश्चित समय-चक्र के अधीन संचालित होती है।

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन को व्यवस्थित एवं परिष्कृत करने के लिए षोडश संस्कारों की परम्परा विकसित की गई है। ये संस्कार गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक मानव जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण चरण को संस्कारित करने का कार्य करते हैं। इन संस्कारों की संरचना में एक विशेष बात यह है कि प्रत्येक संस्कार के लिए एक निश्चित "मुहूर्त" का निर्धारण किया गया है।

यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि—

☞ क्या यह केवल धार्मिक विश्वास है?

☞ या इसके पीछे कोई वैज्ञानिक आधार भी है?

ज्योतिषशास्त्र में मुहूर्त का निर्धारण अत्यन्त सूक्ष्म गणना के आधार पर किया जाता है—

"तिथिर्वारं नक्षत्रं योगः करणमेव च।" [2]

यह दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय मनीषियों ने समय को अत्यन्त सूक्ष्म इकाइयों में विभाजित कर उसका विश्लेषण किया था।

यदि हम आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से देखें, तो यह स्पष्ट होता है कि—

- मानव शरीर एक निश्चित जैविक लय में कार्य करता है
- प्रकृति में भी विभिन्न चक्र (cycles) कार्यरत हैं
- समय के अनुसार कार्य करने से उसकी सफलता की संभावना बढ़ जाती है

इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि मुहूर्त-विज्ञान वास्तव में "समय के अनुकूलन" (Time Optimization) की एक प्रणाली है।

अतः इस शोध का उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि मुहूर्त-विज्ञान केवल परम्परा नहीं, बल्कि एक गहन वैज्ञानिक एवं तात्त्विक प्रणाली है, जो मानव जीवन को संतुलित एवं प्रभावी बनाने में सहायक है।

2. शोध के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. मुहूर्त की शास्त्रीय अवधारणा का गहन विश्लेषण करना।
2. काल-सिद्धांत एवं जैविक लयों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करना।
3. ब्रह्माण्डीय चक्रों एवं मानव जीवन के मध्य समन्वय को स्पष्ट करना।
4. संस्कारों में मुहूर्त की भूमिका का वैज्ञानिक विश्लेषण करना।
5. आधुनिक जीवन में मुहूर्त-विज्ञान की प्रासंगिकता को सिद्ध करना।

3. शोध-पद्धति

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति पर आधारित है।

इसमें निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया गया है—

- **ग्रन्थ अध्ययन पद्धति** → वेद, उपनिषद, स्मृति एवं ज्योतिष ग्रंथों का अध्ययन
- **तुलनात्मक पद्धति** → शास्त्रीय सिद्धांतों एवं आधुनिक विचारों की तुलना
- **व्याख्यात्मक पद्धति** → सिद्धांतों का तार्किक विश्लेषण
- **दार्शनिक विश्लेषण** → काल एवं मुहूर्त की तात्त्विक व्याख्या

4. काल का वैदिक एवं दार्शनिक स्वरूप

4.1 वैदिक दृष्टि में काल

भारतीय वैदिक साहित्य में "काल" को केवल घटनाओं के अनुक्रम का मापक न मानकर एक **सक्रिय, सृजनात्मक एवं नियामक शक्ति** के रूप में स्वीकार किया गया है। वैदिक ऋषियों के लिए काल एक निष्क्रिय पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि सृष्टि की गति, परिवर्तन और विकास का मूल प्रेरक तत्व है।

अथर्ववेद में काल के विषय में कहा गया है—

"कालो हि भूतानां प्रभवो नित्य एव च।"[3]

अर्थात् काल ही समस्त प्राणियों की उत्पत्ति एवं संचालन का कारण है।

इस कथन में काल की दो महत्वपूर्ण विशेषताएँ निहित हैं—

1. **सृजनात्मकता (Creative Principle)** — काल से ही सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है
2. **नियामकता (Regulatory Principle)** — वही काल समस्त क्रियाओं को नियंत्रित करता है

इस प्रकार काल को एक **cosmic regulator** के रूप में देखा गया है।

इसी प्रकार ऋग्वेद संहिता में ऋतु-चक्र, दिवस-रात्रि और प्राकृतिक घटनाओं के माध्यम से समय की चक्रीय संरचना का वर्णन किया गया है।[4]

ऋग्वैदिक दृष्टि में—

☞ समय रैखिक (linear) नहीं, बल्कि चक्रीय (cyclical) है

☞ यह चक्र निरंतर पुनरावृत्ति करता है (cycle of recurrence)

यह विचार आधुनिक विज्ञान के "cyclic time model" से अत्यन्त निकट है।

अतिरिक्त रूप से शतपथ ब्राह्मण में यज्ञों के समय-निर्धारण का विशेष महत्त्व बताया गया है।[5]

यहाँ स्पष्ट किया गया है कि—

☞ यदि यज्ञ उचित समय पर किया जाए, तो उसका फल अधिक प्रभावी होता है

☞ समय की उपेक्षा करने पर वही कर्म अपेक्षित फल नहीं देता

इससे यह सिद्ध होता है कि वैदिक युग में "time-sensitivity of action" की गहन समझ विद्यमान थी।

☞ समेकित रूप से कहा जा सकता है कि—

वैदिक दृष्टि में "काल" केवल मापन का उपकरण नहीं, बल्कि **"सृष्टि का संरचनात्मक एवं क्रियात्मक आधार (Structural & Functional Principle)"** है।

4.2 उपनिषदों में काल

उपनिषदों में "काल" की अवधारणा और भी अधिक सूक्ष्म, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक रूप में विकसित होती है। यहाँ काल को केवल

© 2026 चमन लाल, डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भौतिक या खगोलीय तत्व न मानकर ब्रह्म की अभिव्यक्ति (manifestation of Absolute Reality) के रूप में देखा गया है।
छांदोग्य उपनिषद का प्रसिद्ध सिद्धांत—
"यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे।"[6]
यह केवल एक दार्शनिक कथन नहीं, बल्कि एक गहन वैज्ञानिक संकेत है।
इस सिद्धांत के अनुसार—
☞ मानव शरीर (microcosm)
☞ ब्रह्माण्ड (macrocosm)
दोनों के मध्य संरचनात्मक एवं क्रियात्मक समानता विद्यमान है।
इसका अर्थ यह है कि—

- जिस प्रकार ब्रह्माण्ड में विभिन्न चक्र (cycles) कार्यरत हैं
- उसी प्रकार मानव शरीर में भी आन्तरिक लय (internal rhythms) कार्य करती हैं

☞ यही सिद्धांत आगे चलकर "जैविक घड़ी" की अवधारणा से जुड़ता है।
इसी प्रकार बृहदारण्यक उपनिषद में काल को ब्रह्म की अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है।[7]
यहाँ काल को अनादि (beginningless), अनन्त (endless), सर्वव्यापी (all-pervading) बताया गया है।
इस दृष्टि से काल केवल एक "dimension" नहीं, बल्कि एक **metaphysical reality** है, जो सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है।
उपनिषदों का यह दृष्टिकोण यह संकेत करता है कि—
☞ समय और अस्तित्व (time & existence) अलग-अलग नहीं हैं
☞ बल्कि समय ही अस्तित्व की अभिव्यक्ति है
☞ यही कारण है कि भारतीय परम्परा में आदि में काल का सम्मान किया जाता है

- समय के अनुसार कार्य करने को अनिवार्य माना जाता है

यदि हम वैदिक एवं उपनिषदिक दृष्टियों को एक साथ देखें, तो यह स्पष्ट होता है कि—
✓ वैदिक दृष्टि → काल = सृष्टि का नियामक सिद्धांत
✓ उपनिषदिक दृष्टि → काल = ब्रह्म की अभिव्यक्ति
"काल = ब्रह्माण्डीय व्यवस्था का सक्रिय एवं चेतन आयाम"
यही आधार आगे चलकर मुहूर्त-विज्ञान को वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दोनों दृष्टियों से सुदृढ़ करता है।

5. मुहूर्त का शास्त्रीय एवं संस्कारात्मक विश्लेषण

5.1 मुहूर्त की संकल्पना: गुणात्मक समय

भारतीय ज्योतिषशास्त्र में "मुहूर्त" को केवल समय की मात्रात्मक इकाई (quantitative unit) के रूप में नहीं, बल्कि **गुणात्मक समय (qualitative time)** के रूप में परिभाषित किया गया है। इसका आशय यह है कि समय केवल "कितना" (how much) नहीं, बल्कि "कैसा" (how is the nature of time) भी होता है।
प्राचीन भारतीय मनीषियों ने यह अनुभव किया कि—
☞ प्रत्येक क्षण का एक विशिष्ट "स्वभाव" (temporal quality) होता है
☞ यह स्वभाव उस समय की खगोलीय स्थिति, प्राकृतिक अवस्था एवं सूक्ष्म ऊर्जा-संतुलन से निर्धारित होता है, इसी आधार पर समय को "शुभ" एवं "अशुभ" श्रेणियों में विभाजित किया गया।
ज्योतिषशास्त्र में स्पष्ट रूप से कहा गया है—
**"तिथिर्वारं नक्षत्रं योगः करणमेव च।
एते पंचाङ्गमित्युक्तं मुहूर्तस्य विनिर्णये॥"[8]**
यह श्लोक यह संकेत करता है कि मुहूर्त का निर्धारण एक बहु-आयामी प्रक्रिया है, जिसमें—

- चन्द्रमा की स्थिति (तिथि)
- सौर-काल (वार)
- नक्षत्रीय स्थिति
- योग एवं करण

सभी का समन्वय किया जाता है।
☞ अतः मुहूर्त = **समय का बहु-घटक विश्लेषण (multi-factor temporal synthesis)**

5.2 ज्योतिषीय आधार: ग्रह-नक्षत्र एवं समय-गुण

मुहूर्त-विज्ञान का प्रमुख आधार ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति है।
बृहत्पाराशर होरा शास्त्र में यह प्रतिपादित किया गया है कि—
☞ ग्रह केवल भौतिक पिंड नहीं हैं
☞ वे सूक्ष्म प्रभाव (subtle influences) उत्पन्न करते हैं, जो पृथ्वी पर जीवन को प्रभावित करते हैं[9]
यहाँ ग्रहों को "कारक" (influencing agents) के रूप में देखा गया है।
इसी प्रकार मुहूर्त चिन्तामणि में विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त मुहूर्त का निर्धारण अत्यन्त व्यवस्थित ढंग से किया गया है।[10]
बृहत्संहिता में वराहमिहिर कहते हैं—
"शुभे मुहूर्ते कार्याणि सिद्धिमायान्ति नान्यथा।" [11]
यह कथन केवल आस्था नहीं, बल्कि एक अनुभवजन्य सत्य को व्यक्त करता है कि—
☞ कार्य की सफलता केवल प्रयास पर नहीं, बल्कि समय पर भी निर्भर करती है

5.3 मुहूर्त का गणितीय एवं खगोलीय आधार

मुहूर्त-विज्ञान की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता इसकी **गणितीय शुद्धता (mathematical precision)** है।
प्राचीन भारतीय ज्योतिषियों ने—

- सूर्य की गति
- चन्द्रमा का चक्र
- नक्षत्रों की स्थिति

का सूक्ष्म अध्ययन कर समय को विभिन्न इकाइयों में विभाजित किया।
उदाहरण—

- 1 दिवस =30 मुहूर्त
- 1 मुहूर्त ≈48 मिनट

यह विभाजन यह दर्शाता है कि समय को केवल मोटे स्तर पर नहीं, बल्कि सूक्ष्म स्तर पर भी समझा गया था।
सूर्य सिद्धांत में खगोलीय गणनाओं के आधार पर समय-निर्धारण का विस्तृत विवेचन मिलता है।[12]

© 2026 चमन लाल, डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इससे यह सिद्ध होता है कि मुहूर्त-विज्ञान केवल धार्मिक परम्परा नहीं, बल्कि एक खगोलीय आधार पर स्थापित प्रणाली है।

5.4 संस्कारों में मुहूर्त का अनुप्रयोग

भारतीय संस्कार प्रणाली में मुहूर्त का प्रयोग अत्यन्त व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण है। प्रत्येक संस्कार के पीछे एक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक एवं जैविक उद्देश्य निहित है, और मुहूर्त का चयन उसी के अनुरूप किया जाता है।

(1) गर्भाधान संस्कार

इसमें ग्रह-स्थिति एवं समय का चयन इस प्रकार किया जाता है कि—
👉 संतति के शारीरिक एवं मानसिक गुणों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े

(2) नामकरण संस्कार

यह सामान्यतः जन्म के 11वें या 12वें दिन किया जाता है—
👉 यह समय नवजात शिशु की जैविक स्थिरता का प्रतीक है

(3) उपनयन संस्कार

शिक्षा के आरम्भ के लिए चयनित मुहूर्त—
👉 मानसिक ग्रहणशीलता (cognitive receptivity) को बढ़ाने हेतु होता है

(4) विवाह संस्कार

यह सबसे जटिल एवं मुहूर्त-निर्भर संस्कार है—
👉 इसमें तिथि, नक्षत्र, ग्रह एवं लग्न का सूक्ष्म समन्वय किया जाता है
👉 इससे स्पष्ट है कि संस्कार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि **"time-sensitive developmental interventions"** हैं।

5.5 मुहूर्त का तात्त्विक आधार: समय की गुणात्मकता

भारतीय दर्शन में यह माना गया है कि समय तटस्थ नहीं होता, बल्कि उसमें गुणात्मक भिन्नता होती है।
मनुस्मृति में विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त समय का उल्लेख मिलता है।[13]
यह सिद्धांत आधुनिक विज्ञान के इष्टतम समय "optimal timing" के सिद्धांत से मेल खाता है, जिसमें यह माना जाता है कि— किसी कार्य का परिणाम उसके समय पर निर्भर करता है

5.6 मुहूर्त और कर्मफल का सम्बन्ध

भारतीय दर्शन में कर्मफल का सिद्धांत अत्यन्त महत्वपूर्ण है।
यह माना गया है कि कर्म का फल केवल कर्म की प्रकृति पर नहीं, बल्कि उसके समय पर भी निर्भर करता है, भगवद्गीता में कहा गया है—
"कर्मण्येवाधिकारस्ते..."[14]
किन्तु इसका एक गूढ़ अर्थ यह भी है कि उचित समय पर किया गया कर्म अधिक फलदायी होता है

5.7 समेकित विश्लेषण

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मुहूर्त-विज्ञान एक बहु-आयामी प्रणाली है, मुहूर्त =
✔ खगोलीय गणना (Astronomical Framework)
✔ दार्शनिक आधार (Philosophical Foundation)
✔ व्यावहारिक अनुप्रयोग (Applied System)
✔ मनोवैज्ञानिक प्रभाव (Psychological Impact)
इन सभी का समन्वय इसे एक **सम्पूर्ण समय-विज्ञान (Holistic Time Science)** बनाता है।

6. मुहूर्त आलोक में का वैज्ञानिक विश्लेषण:

6.1 वैज्ञानिक प्रस्तावना: मुहूर्त-विज्ञान का पुनर्पाठ

मुहूर्त-विज्ञान को यदि केवल पारम्परिक या धार्मिक अवधारणा के रूप में देखा जाए, तो उसका वास्तविक स्वरूप सीमित रह जाता है। समकालीन अकादमिक विमर्श में आवश्यक है कि इस अवधारणा का पुनर्पाठ (reinterpretation) वैज्ञानिक प्रतिमानों के आलोक में किया जाए।
प्राचीन भारतीय मनीषियों ने अनुभव एवं निरीक्षण के आधार पर यह प्रतिपादित किया कि समय का प्रभाव केवल बाह्य घटनाओं पर नहीं, बल्कि जैविक, मानसिक एवं व्यवहारिक प्रक्रियाओं पर भी पड़ता है।
आधुनिक विज्ञान भी यह स्वीकार करता है कि—

- जैविक तंत्र समय-आधारित लयों (time-dependent rhythms) में कार्य करता है
- पर्यावरणीय चक्र (environmental cycles) जीवित प्रणालियों को प्रभावित करते हैं

इस प्रकार मुहूर्त-विज्ञान को एक **"integrated temporal science"** के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें समय, प्रकृति एवं मानव के मध्य समन्वय स्थापित किया जाता है।

6.2 जैविक घड़ी (Biological Clock) और काल-संयोजन

मानव शरीर एक जटिल जैविक प्रणाली है, जिसमें विभिन्न क्रियाएँ एक निश्चित लय (rhythm) के अनुसार संचालित होती हैं। आधुनिक विज्ञान में इसे "जैविक घड़ी" (biological clock) या "क्रोनोबायोलॉजी" (chronobiology) कहा जाता है।
भारतीय दृष्टि में इस अवधारणा को "काल-संयोजन" के रूप में समझा जा सकता है।
प्राचीन भारतीय परम्परा में दिन को विभिन्न भागों में विभाजित कर प्रत्येक समय के लिए विशिष्ट क्रियाएँ निर्धारित की गई हैं—

- ब्रह्ममुहूर्त →ध्यान, अध्ययन
- पूर्वाह्न →कर्म, कार्य
- सायंकाल →विश्राम, उपासना

यह विभाजन यह संकेत करता है कि—
👉 मानव शरीर की कार्यक्षमता समय के अनुसार परिवर्तित होती है
👉 मानसिक एवं शारीरिक ऊर्जा समान नहीं रहती
यह तथ्य आधुनिक क्रोनोबायोलॉजी के सिद्धांतों से मेल खाता है, जहाँ यह पाया गया है कि—

- नींद-जागरण चक्र (sleep-wake cycle)
- हार्मोनल स्राव (hormonal secretion)
- मानसिक एकाग्रता

सभी समय-निर्भर (time-dependent) होते हैं।

© 2026 चमन लाल, डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि—

मुहूर्त = जैविक लयों के अनुकूल समय (biologically optimized timing)

6.3 ब्रह्माण्डीय लय (Cosmic Rhythm): खगोलीय एवं पर्यावरणीय आयाम

ब्रह्माण्ड में प्रत्येक घटना एक निश्चित लय (rhythm) में घटित होती है।

- पृथ्वी का घूर्णन →दिन-रात्रि
- पृथ्वी की परिक्रमा →ऋतु परिवर्तन
- चन्द्रमा का चक्र →ज्वार-भाटा

ये सभी उदाहरण यह स्पष्ट करते हैं कि ब्रह्माण्ड एक सुव्यवस्थित "rhythmic system" है।

भारतीय शास्त्रों में भी यही विचार व्यक्त किया गया है—

छांदोग्य उपनिषद—

"यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे।"[15]

यह सिद्धांत यह संकेत करता है कि मानव शरीर और ब्रह्माण्ड के मध्य गहन सामंजस्य है

इसी प्रकार बृहत्संहिता में वराहमिहिर ने ग्रहों एवं नक्षत्रों के प्रभाव का विश्लेषण किया है।[16]

यहाँ यह स्पष्ट किया गया है कि—

☞ ग्रहों की स्थिति केवल खगोलीय घटना नहीं है

☞ इसका प्रभाव पृथ्वी के पर्यावरण एवं जीवधारियों पर पड़ता है

अतः **Cosmic rhythm = environmental modulation of life processes**

6.4 जैविक एवं ब्रह्माण्डीय लयों का समन्वय

अब प्रमुख प्रश्न यह है कि क्या मानव शरीर की आन्तरिक लय और ब्रह्माण्डीय लय के बीच कोई सम्बन्ध है?

भारतीय दर्शन का उत्तर स्पष्ट है—हाँ।

उपनिषदों का सिद्धांत—

"यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे"—

यह इस सम्बन्ध का दार्शनिक आधार प्रदान करता है।

आधुनिक दृष्टि से इसे "bio-cosmic coupling" कहा जा सकता है, अर्थात्—

☞ जीवित तंत्र (biological systems)

☞ बाह्य खगोलीय एवं पर्यावरणीय तंत्र (cosmic/environmental systems)

के मध्य परस्पर क्रिया (interaction) होती है।

उदाहरण—

- चन्द्रमा के चक्र का प्रभाव जलतत्व पर-
- ऋतु परिवर्तन का प्रभाव शरीर की क्रियाओं पर

यह दर्शाता है कि मानव शरीर पूर्णतः स्वतंत्र नहीं, बल्कि बाह्य लयों से जुड़ा हुआ है।

6.5 समन्वय सिद्धांत (Synchronization Theory): मुहूर्त का वैज्ञानिक केन्द्र

मुहूर्त-विज्ञान का मूल वैज्ञानिक सिद्धांत "समन्वय" (synchronization) है।

जब कोई कार्य उचित मुहूर्त में किया जाता है, तब निम्नलिखित तीन स्तरों पर समन्वय स्थापित होता है—

(1) जैविक समन्वय)Biological Alignment)

शरीर की आन्तरिक लय उस समय के अनुकूल होती है

(2) ब्रह्माण्डीय समन्वय)Cosmic Alignment)

ग्रह-नक्षत्र एवं प्राकृतिक चक्र अनुकूल स्थिति में होते हैं

(3) मनोवैज्ञानिक समन्वय)Psychological Alignment)

मन की अवस्था संतुलित एवं सकारात्मक होती है

☞ इन तीनों के एक साथ सक्रिय होने पर—कार्य की सफलता की संभावना अधिकतम हो जाती है

6.6 ऊर्जा एवं स्पंदन सिद्धांत (Vibrational & Energetic Interpretation)

भारतीय दर्शन में यह मान्यता है कि सम्पूर्ण सृष्टि ऊर्जा (energy) एवं स्पंदन (vibration) से निर्मित है।

ग्रह, नक्षत्र एवं पृथ्वी सभी ऊर्जा-क्षेत्र (energy fields) के रूप में कार्य करते हैं।

इन ऊर्जा-क्षेत्रों का सूक्ष्म प्रभाव मानव शरीर एवं मन पर पड़ता है।

मुहूर्त-विज्ञान का उद्देश्य इन ऊर्जा-प्रवाहों के अनुकूल समय का चयन करना है।

इस दृष्टि से **मुहूर्त = ऊर्जा-संरेखण (Energetic Alignment of Action)**

6.7 संस्कारों में वैज्ञानिक समन्वय (Applied Scientific Integration)

संस्कारों में मुहूर्त का चयन इस प्रकार किया गया है कि वह मानव विकास के विभिन्न चरणों के साथ सामंजस्य स्थापित करे उदाहरण—

- जन्म के पश्चात नामकरण →जैविक स्थिरता का समय
- शिक्षा आरम्भ →मानसिक ग्रहणशीलता का समय
- विवाह →सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिपक्वता का समय

यह दर्शाता है कि संस्कारों का समय-निर्धारण एक प्रकार का **"developmental synchronization model"** है

6.8 समेकित वैज्ञानिक निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि मुहूर्त-विज्ञान =

✓ जैविक लय (Biological Rhythm)

✓ ब्रह्माण्डीय लय (Cosmic Rhythm)

✓ मनोवैज्ञानिक अवस्था (Psychological State)

✓ ऊर्जा-संतुलन (Energetic Equilibrium)

इस प्रकार मुहूर्त-विज्ञान को एक **"Holistic Time Optimization System"** के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

7. मनोवैज्ञानिक आयाम, आधुनिक प्रासंगिकता एवं निष्कर्ष

7.1 मनोवैज्ञानिक आयाम

मुहूर्त-विज्ञान का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण किन्तु प्रायः उपेक्षित पक्ष इसका **मनोवैज्ञानिक प्रभाव** है।

मानव व्यवहार केवल बाह्य परिस्थितियों से ही नहीं, बल्कि उसकी आन्तरिक मानसिक अवस्था (mental state) से भी प्रभावित होता है।

भारतीय दर्शन में मन, बुद्धि एवं चित्त को कर्म के प्रमुख निर्धारक तत्व माना गया है। भगवद्गीता में कहा गया है—

© 2026 चमन लाल, डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

"श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्।"[17]
यह सिद्धांत यह संकेत करता है कि सकारात्मक मानसिक अवस्था कार्य की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को "शुभ मुहूर्त" में करता है, तब—

- उसके मन में विश्वास) confidence) उत्पन्न होता है
- संदेह एवं भय कम होते हैं
- मानसिक एकाग्रता बढ़ती है

यह स्थिति आधुनिक मनोविज्ञान में "placebo-like confidence effect" के समान है, जहाँ विश्वास स्वयं परिणाम को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, मुहूर्त एक प्रकार का **मानसिक संरचनात्मक ढाँचा (cognitive framework)** प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति अपने कार्य को अधिक संगठित एवं उद्देश्यपूर्ण ढंग से सम्पन्न करता है।
अतः **मुहूर्त = मानसिक स्थिरता + आत्मविश्वास + सकारात्मकता का उत्प्रेरक**

7.2 व्यवहारिक एवं सामाजिक आयाम

मुहूर्त-विज्ञान का प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व भी है। भारतीय समाज में—

- विवाह
- नामकरण
- गृह प्रवेश

आदि महत्वपूर्ण कार्य सामूहिक रूप से सम्पन्न होते हैं। मुहूर्त का निर्धारण इन कार्यों को सुव्यवस्थित, समयबद्ध, सामंजस्यपूर्ण बनाता है। यह सामाजिक स्तर पर "सामयिक समन्वय प्रणाली" "temporal coordination system" के रूप में कार्य करता है।

7.3 आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

आधुनिक युग में जीवन अत्यन्त तीव्र, अव्यवस्थित एवं तनावपूर्ण हो गया है। इसका एक प्रमुख कारण है—
समय-अनुशासन (time discipline) का अभाव
मुहूर्त-विज्ञान इस समस्या का एक पारम्परिक समाधान प्रस्तुत करता है।
यदि इसे आधुनिक सन्दर्भ में समझा जाए, तो यह—

- Time management system
- Behavioural optimisation model
- Psychological stabilization tool

आदि के रूप में कार्य कर सकता है।
विशेष रूप से—

- दैनिक दिनचर्या)daily routine)
- स्वास्थ्य प्रबंधन)health regulation)
- निर्णय) निर्धारण-decision making) आदि में इसका उपयोग अत्यन्त उपयोगी हो सकता है।

भारतीय दर्शन में "काल" को केवल मापन का साधन नहीं, बल्कि एक सक्रिय शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—
"कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धः।"[18]
यह कथन यह संकेत करता है कि—
☞ काल सृष्टि के निर्माण एवं विनाश दोनों का कारण है
☞ यह एक गतिशील एवं प्रभावकारी शक्ति है
यदि इस दृष्टिकोण को मुहूर्त-विज्ञान से जोड़ा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि—
☞ मुहूर्त का चयन वास्तव में काल-शक्ति के अनुकूलन (alignment with time-force) का प्रयास है

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र के विश्लेषण से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

(1) मुहूर्त-विज्ञान का वास्तविक स्वरूप
मुहूर्त केवल धार्मिक परम्परा नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित **समय-विज्ञान प्रणाली (time science system)** है।

(2) बहु-आयामी आधार (Multi-dimensional Basis)
यह प्रणाली निम्नलिखित आधारों पर निर्मित है—

- वैदिक एवं उपनिषदिक दर्शन
- ज्योतिषीय गणना
- जैविक लय)biological rhythm)
- ब्रह्माण्डीय लय)cosmic rhythm)
- मनोवैज्ञानिक प्रभाव

(3) समन्वय सिद्धांत (Core Principle)
मुहूर्त का मूल सिद्धांत "समन्वय" है—
☞ शरीर, मन एवं प्रकृति के मध्य संतुलन स्थापित करना

(4) वैज्ञानिक पुनर्पाठ)Scientific Reinterpretation)
आधुनिक विज्ञान के आलोक में मुहूर्त को—
✓ Chronobiology
✓ Environmental cycles
✓ Behavioral science
के साथ जोड़ा जा सकता है।

(5) आधुनिक प्रासंगिकता
आज के युग में मुहूर्त-विज्ञान—
☞ समय प्रबंधन
☞ मानसिक संतुलन
☞ जीवन-संरचना
आदि के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अतः यह प्रतिपादित किया जा सकता है कि—
"संस्कारों में मुहूर्त का चयन मानव जीवन को जैविक, मानसिक एवं ब्रह्माण्डीय लयों के साथ समन्वित करने का एक वैज्ञानिक एवं दार्शनिक प्रयास है।"

© 2026 चमन लाल, डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पादाटिप्पणी-

1. महाभारत, शान्ति पर्व, अध्याय 231, श्लोक 12।

2. ज्योतिष शास्त्र, पंचांग सिद्धान्त — "तिथिर्वारं नक्षत्रं योगः करणमेव च"।

3. अथर्ववेद, काण्ड 19, सूक्त 53, मंत्र 1।
4. ऋग्वेद संहिता, मण्डल 1, सूक्त 164।
5. शतपथ ब्राह्मण, काण्ड 3, अध्याय 1, ब्राह्मण 1।
6. छांदोग्य उपनिषद, अध्याय 6, खण्ड 2, मंत्र 1।
7. बृहदारण्यक उपनिषद, अध्याय 3, ब्राह्मण 8।
8. ज्योतिष शास्त्र, पंचांग सिद्धान्त, श्लोक 1।
9. बृहत्पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय 3, श्लोक 5–7।
10. मुहूर्त चिन्तामणि, प्रथम प्रकरण, श्लोक 12–15।
11. बृहत्संहिता, अध्याय 2, श्लोक 1।
12. सूर्य सिद्धांत, अध्याय 1, श्लोक 10–12।
13. मनुस्मृति, अध्याय 4, श्लोक 92।
14. भगवद्गीता, अध्याय 2, श्लोक 47।
15. छांदोग्य उपनिषद, अध्याय 6, खण्ड 2।
16. बृहत्संहिता, अध्याय 5।
17. भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक 39।
18. भगवद्गीता, अध्याय 11, श्लोक 32।

संदर्भ सूची

1. पाण्डेय आरबी. हिन्दू संस्कार. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन.
2. काणे पीवी. धर्मशास्त्र का इतिहास. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज.
3. शास्त्री नेमिचन्द्र. भारतीय ज्योतिष शास्त्र. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.
4. पाण्डेय रामचन्द्र. मुहूर्त विज्ञान. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन.
5. सिद्धान्तालंकार सत्यव्रत. भारतीय संस्कृति के मूल तत्व. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
6. पाण्डेय गोविन्दचन्द्र. वैदिक संस्कृति. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन.
7. राधाकृष्णन सर्वपल्ली. भारतीय दर्शन. दिल्ली: राजपाल एंड संस.
8. सरस्वती दयानन्द. संस्कार विधि. अजमेर: वैदिक यंत्रालय.
9. भट्ट बालकृष्ण. ज्योतिष सिद्धांत. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन.
10. पाण्डेय भगवती प्रसाद. भारतीय काल गणना. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2026 चमन लाल, डॉ. चूड़ामणि त्रिवेदी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/